IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कमार जनजाति की महिलाओं की रोजगार एवं ऋणग्रस्तता की स्थिति का अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में

दीपिका कंवर, डॉ. एल. एस. गजपाल , मुकेश सिंह

1. शोधार्थी : समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

2. एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

3. शोधार्थी : शास. जे. यो. छ. ग. महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश- कमार जनजाति शासन द्वारा घोषित एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। यह गोड़ की एक उपजाति है। कमार मध्य भारत की अन्य जनजातियों की भांति प्रोटोआस्ट्रेलायड प्रजाति के हैं। कमार द्रविडियन परिवार से संबंधित है। इनका संकेन्द्रण मुख्यतः गरियाबंद जिले में तथा आंशिक रूप से धमतरी जिले में है। जनजातीय समुदाय में ऋणग्रस्तता एक प्रमुख समस्या है। राज्य में इन्हें विशेष पिछड़ी जनजाति के श्रेणी में रखा गया है इनके विकास एवं उत्थान के लिए गरियाबंद जिले में कमार विकास प्राधिकरण का गठन किया गया है। अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इन्हें साहूकारों, महाजनों एवं बैंकों से ऋण लेना पड़ता है। उचित समय पर ऋण नहीं चुकाने पर जनजातियों को शोषण का शिकार का होना पड़ता है। यह अध्ययन गरियाबंद जिला के कमार अनुसूचित जनजाति पर आधारित है। इस अध्ययन हेतु गरियाबंद जिले के 3 कमार बाहुल्य ग्रामों का चयन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से 50 कमार परिवारों के ऋणग्रस्तता की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन की प्राप्त जानकारी से ज्ञात होता है कि कमार जनजाति परिवार में ऋणग्रस्तता जैसी गंभीर समस्या विद्यमान है ।

महत्वपूर्ण शब्द- कमार जनजाति, ऋणग्रस्तता

प्रस्तावना- कमार अनुसूचित जनजाति भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है। कमार जनजाति दुर्गम एवं अभावग्रस्त क्षेत्र में निवास करने के कारण अत्यंत पिछड़ी हुई है, जिसके कारण विकास से वंचित है। कमार जनजाति के पिछड़ेपन के कारण महिलाओं की समस्याओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है, अतः उन्हें विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई है। सरकारी कार्यक्रमों के प्रयासों के बावजूद कमार जनजाति की महिलाओं की स्थिति निम्नतम है । सरकारी प्रयासों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से जनजाति समाज की स्थिति को ऊपर उठाने के लिये निरंतर प्रयासरत है फिर भी यह जनजाति समाज विकास से स्वयं को जोड़ पाने में असफल रहा है। तमाम कोशिशों के बाद भी जनजाति समाज अशिक्षा, ऋणग्रसस्ता, शोषण तथा निर्धनता जैसी सामाजिक समस्याओं से ग्रसित है। ऐसे में कमार जनजाति की महिलाओं की वर्तमान स्थिति एवं समस्याओं का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

शोध अध्ययनों की समीक्षा -

शासन द्वारा समय-समय पर कमार जनजाति से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं पर शोध किए जा चुके है, जिससे अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। शोधकार्यो एवं सरकारी प्रयासों के माध्यम से इस जनजाति समाज की स्थिति को ऊपर उठाने के लिए निरंतर प्रयासरत है फिर भी कमार जनजाति विकास से स्वयं को जोड़ पाने में असफल रहा है ।

दुबे (1951) 'द कमार' में कमार जनजाति में हुए परिवर्तनों को विभिन्न अध्यायों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अपने अध्ययन में 45 ग्रामों का चयन किया । सम्पूर्ण अध्ययन संरचनात्मक प्रकार्यात्मक अध्ययन के द्वारा किया गया। अपने अध्ययन में आय-व्यय एवं ऋण का विवरण भी विश्लेषणात्मक रूप से किया है।

कोठारी सी.आर. रिसर्च मेथडोलॉजी (2004) न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन न्यू दिल्ली के माध्यम से शोध के विभिन्न आयाम से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है जिससे शोध कार्य को सुगम बनाया जा सकता है ।

कुमार जितेंद्र (2013) ने छत्तीसगढ़ के रायपुर एवं धमतरी जिले कमार जनजाति पर अध्ययन किया। कमार जनजाति कि सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति पर बाह्य संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य था। अपने अध्ययन में 593 उत्तरदाताओं का चयन किया क्षेत्रकार्य एवं साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया। आज 21वीं सदी में वैश्वीकरण के इस युग में कमार जनजाति काफी हद तक अपनी आदिमता को बनाए हुये है आज भी इनमें शिक्षा जैसी न्यूनतम आधुनिक सामाजिक स्थिति बहुत निम्न है। फिर भी इनकी संस्कृति पर गैरजनजातिय संस्कृति का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। बाह्य भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति से जनजातीय समाज प्रभावित हो रहा है। इनके विकास संबंधी सभी कार्यक्रमों का चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वयन आवश्यक है।

कुरै एवं प्रधान (2014) ने गरियाबंद जिले में कमार जनजाति की समस्याओं एवं संभावनाओं पर अध्ययन किया है। अपने अध्ययन में 295 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया है। अध्ययन का उद्देश्य शासकीय योजनाओं का कमार जनजाति के विकास में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। तथ्यों का संकलन संरचित अनुसूची तथा एकल एवं समूह साक्षात्कार के माध्यम से किया। कमार जनजाति जीविकोपार्जन के लिए स्थानान्तरित कृषि एवं जंगलों पर निर्भर है। ज्यादातर कमार परिवारों में मद्यपान की स्थिति गंभीर है, महिला एवं पुरुष दोनों मद्यपान करते हैं, जिसका प्रभाव उनकी सामाजिक स्थिति एवं उनके बच्चों पर पड़ता है। स्वास्थ्यगत लाभ के लिए परंपरागत पद्धति का प्रयोग करते हैं। शिक्षा की स्थिति निम्न है बहुत कम बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। शिक्षा एवं जागरूकता की कमी के कारण शासन की योजनाओं का लाभ नहीं ले पाते । वर्तमान में बांस से निर्मित वस्तुओं का निर्माण बहुत कम परिवार करते है। शासन की योजनाओं का चरणबद्ध क्रियान्वयन कर इनका संरक्षण करने की आवश्यकता है ।

सेठी अर्चना (2017) ने छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में कमार जनजाति के आय एवं उपभोग प्रवृत्ति का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य कमार जनजाति की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर पर आय के प्रभाव एवं शासन द्वारा चलाए जाने वाले योजनाओं का अध्ययन करना है। अपने अध्ययन में 110 उत्तरदाताओं का चयन दैवनिदर्शन दद्वारा किया । तथ्यों का संकलन साक्षात्कार एवं संरचित अनुसूची के माध्यम से किया। अध्ययन से प्राप्त हुआ कि शैक्षणिक स्तर का आय पर प्रभाव पड़ता है। उच्च शिक्षित वर्ग उच्च आयवर्ग में शामिल है । अधिकांश कमार आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहे है। शासकीय योजनाओं के प्रभाव से कमारों के जीवन स्तर पर सुधार हो रहा है लेकिन अत्यंत धीमी गति से, इसका मुख्य कारण इनका अशिक्षित एवं जागरूकता की कमी ।

इनके विकास के लिए जो भी योजनाएँ बनाई गयी है आवश्यकता है की उसका क्रियान्वयन ईमानदारी से हो।

अध्ययन का उद्देश्य

1 कमार जनजाति की महिलाओं की ऋणग्रस्तता की स्थिति का अध्ययन

2 ऋण भुगतान की स्थिति का अध्ययन

3 ऋण लेने की समस्या का अध्ययन

शोध पद्धति एवं उत्तरदाताओं का चयन -

प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के गरियाबंद जिले के छुरा विकासखण्ड के कुमार बाहुल्य ग्राम का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु 3 ग्राम तुहियामुडा, भेजराडीह एवं पंटोरा का चयन किया गया है। सभी ग्राम जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्रत्येक ग्राम की भौगोलिक स्वरूप में भिन्नता है। 50 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है। जिसमें प्रत्येक परिवार के एक महिला उत्तरदाता का चयन किया गया है।

आंकड़ों का संकलन एवं प्रविधि -

आंकड़ों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। अध्ययन जितने ही प्रामाणिक होगे उतनी ही वैज्ञानिकता होगी तभी अनुसंधान की सत्यता तक पहुंची जा सकती हैं, जो शोध प्रबंध अपनी मौलिकता को वास्तव में यथार्थ रूप दे सके। 2011 की जनगणना के अनुसार गरियाबंद जिले की कुल जनसंख्या 5.98 लाख है जिनमें 49.80% पुरुष एवं 50.50 % महिला है । गरियाबंद क्षेत्र के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति वर्ग की कुल जनसंख्या 173977 है, जिसमें 85118 पुरुष जनसंख्या है एवं 88859 महिला जनसंख्या है। जिले का लिंगानुपात 1020 है ।

तथ्यों का प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ों का संकलन एवं अध्ययन हेतु साक्षात्कार अनुसूची उपकरण की सहायता से प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया है। जिससे की वास्तविक अध्ययन स्थल में जाकर विषय एवं समस्या से संबंधित जानकारी प्राप्त हो। द्वितीयक आंकड़ों के संकलन हेतु विभिन्न शोध प्रलेखों, शोध सामग्रियों, पत्र-पत्रिकाओं, शासकीय योजनाओं का प्रतिवेदन एवं सूचना तंत्र के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है जिससे कि अध्ययन को पूर्णतः सारगर्भित रूप दिया जा सके।

ऋणग्रस्तता- ऋणग्रस्तता का आशय है ऋण से ग्रस्त व्यक्ति के लिए ऋण चुकाने की बाध्यता का होना । अपनी आवश्यकताओं के कारण लिया जाने वाला कर्ज जब बढ़ जाता है एवं वे अपनी कर्ज अदायगी में असमर्थ हो जाते है तो यह स्थिति ऋणग्रस्तता की समस्या उत्पन्न करती है। जनजातियाँ अपनी उपभोग की सीमित आवश्यकताओं के साथ प्रकृति पर ही निर्भर रहते हुए सरल जीवन जीते थे, लेकिन कमार जनजाति का आधुनिक सभ्यता के संपर्क में आने से सामाजिक एवं संस्कृति परिस्थिति में बदलाव होने लगा। परिस्थिति अनुसार इस जनजाति की आवश्यकताएं बढ़ने लगी जिससे कि ऋणग्रस्तता की स्थिति बनी हुई हैं। जनजाति समाज ऋणग्रस्तता से इसलिए भी मुक्त नहीं हो पाते क्योंकि उनके द्वारा उत्पादित अथवा संग्रहीत की गई वन वस्तुओं का उचित मूल्य नहीं मिल पाता ।

ऋणग्रस्तता की स्थिति

जनजातीय समुदाय में ऋणग्रस्तता काफी गंभीर समस्या है। अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इन्हें साहूकारों महाजनों एवं बैंकों से ऋण लेना पड़ता है। उचित समय पर ऋण नहीं चुकाने पर जनजातियों को शोषण का शिकार का होना पड़ता है।

तालिका क्रं 1

ऋण लिया गया

क्र	विकल्प	आवृति	प्रतिशत
1.	हाँ	26	52
2.	नहीं	24	48
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कमार जनजाति की 52 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऋण लिया है तथा 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऋण नहीं लिया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अधिकांश कमार उत्तरदाता ऋणग्रस्त है। अध्ययनगत क्षेत्र कमार बाहुल्य ग्राम से है जहां जनजातियों से संबंधित विभिन्न प्रकार की योजना संचालित है ।

तालिका क्रं 2

कमार परिवारों में ऋणग्रस्तता के कारण

क्र	विकल्प	आवृति	प्रतिशत
1	मकान बनवाने हेतु	14	28
2	कृषि कार्य हेतु	4	8
3	बीमारी के ईलाज हेतु	2	4
4	व्यवसाय हेतु	4	8
5	सामाजिक कार्य हेतु	2	4
6	ऋणग्रस्त नहीं है	24	48
	योग	**50**	**100**

अध्ययन में शामिल 48 प्रतिशत कमार परिवारों पर किसी भी प्रकार का ऋण नहीं है । 28 प्रतिशत कमार परिवार ने मकान निर्माण हेतु ऋण लिया हैए 8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार ने कृषि कार्य हेतु ऋण लिया है। 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार ने बीमारी के ईलाज हेतु ऋण लिया है। 8 प्रतिशत कमार परिवार ने व्यवसाय हेतु ऋण लिया है तथा 4 प्रतिशत कमार परिवार ने सामाजिक कार्य जैसे विवाह हेतु ऋण लिया है। इस प्रकार कुल 52 प्रतिशत कमार परिवारों ने किसी न किसी प्रकार से ऋण लिया है जो कि कमार जनजाति में ऋणग्रसस्तता कि स्थिति को दर्शाता है ।

तालिका क्रं 3

ऋण ली गई राशि

क्र.	ऋण (राशि में)	आवृति	प्रतिशत
1	नहीं लिया गया	24	48
2	30000 रु. से कम	14	28
3	30000.60000 रू.	8	16
4	60000 से अधिक	4	8
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अध्ययनगत समूह के 28 प्रतिशत कमार परिवारों ने 30 हजार रु. से कम का ऋण लिया हैए 16 प्रतिशत कमार परिवारों ने 30-40 हजार रु. के मध्य ऋण लिया हैए 8 प्रतिशत परिवारों ने 60 हजार रु. से अधिक ऋण लिया है । 48 प्रतिशत परिवारों ने ऋण नहीं लिया है। अपने आवश्यकताओं कि पूर्ति करने हेतु कमार जनजाति ऋण लेने को बाध्य है ।

तालिका क्रं 4

ऋण लेने के स्त्रोत

क्रं.	ऋण के स्त्रोत	आवृति	प्रतिशत
1.	साहूकार	2	4
2	बैंक	6	12
3	स्वसहायता समूह से	18	36
4	नहीं	24	48
	योग	**50**	**100**

ऋण के स्त्रोत तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के 4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने साहूकार से ऋण लिया है। 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बैंक से ऋण लिया है व 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्थानीय समूहों से ऋण लिया है।

सीमित आवश्यकताओं के बावजूद कमार जनजाति में ऋणग्रसस्ता की स्थिति दिखाई देता है। इस प्रकार 50 उत्तरदाताओं में कुल 52 प्रतिशत ने ऋण लिया है।

तालिका क्रं. 5

ऋण लेने में समस्या आती है

क्रं.	विकल्प	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	20	40
2.	नहीं	30	60
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ऋण आसानी से मिल जाती है तथा 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं को ऋण आसानी से नहीं मिलती अतः तालिका से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अधिकांश कमार जनजाति को ऋऋण लेने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शासन की योजनाओं के जानकारी के अभाव, जागरुकता की कमी के कारण, उचित मदद न मिल पाने के कारण ऋण लेने में समस्या होती है।

तालिका क्रं. 6

ऋण का भुगतान समय पर कर पाते हैं

क्र.	विकल्प	आवृति	प्रतिशत
1	हॉ	38	76
2	नहीं	12	24
	योग	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि अध्ययनगत समूह के 76 प्रतिशत कमार उत्तरदाता ऋण का भुगतान समय पर कर देते हैं तथा 24 प्रतिशत उत्तरदाता समय पर ऋण का भुगतान नहीं कर पाते। अतः निष्कर्ष से प्राप्त होता है कि अधिकांश उत्तरदाता ऋण का भुगतान समय पर कर देते हैं। उत्तरदाताओं के अनुसार यदि ऋण का भुगतान समय पर नहीं करते तो अधिक ब्याज पर भुगतान करना पड़ता हैए ऐसी स्थिति से बचने के लिए वे निर्धारित अवधि पर ही भुगतान कर देते हैं। इससे स्पष्ट है कि कमार जनजाति ऋण का भुगतान समय पर करने के लिए जागरूक है जिससे की उन पर समय पर ऋण न चुकाने के कारण ऋण का भार न पड़े।

निष्कर्ष

सीमित आवश्यकताओं के बावजूद कमार जनजाति में ऋणग्रसस्तता की स्थिति दिखाई देती है। अध्ययन से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं को ऋण आसानी से नहीं मिलतीए अधिकांश उत्तरदाताओं को ऋण लेने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शासन की योजनाओं के जानकारी के अभाव, जागरुकता की कमी के कारण, उचित मदद न मिल पाने के कारण ऋण लेने में समस्या होती है। कमार जनजाति की महिलाओं पर किए गए अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकांश महिलाओं को मजदूर के रूप में कार्य करना पड़ता है जिसके माध्यम से वह अपने परिवार का भरण-पोषण करती है। उन्हें मजदूरी करने के क्रम में शोषण एवं उत्पीड़न का भी शिकार होना पड़ता है ।

सुझाव

कमार जनजाति की महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु शासन द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है किन्तु कमार इन योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे है। विकास योजनाओं में जनजातियों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है कि विकास योजनाएँ उनकी संस्कृति एवं आवश्यकता के अनुकूल बनायी जाए। इसके लिए आवश्यक है कि ग्राम स्तर पर महिला मण्डल के माध्यम से आसान तरीके से स्वसहायता समूह की स्थापना एवं संचालन हेतु सरकार द्वारा वित्तीय सहायता एवं ऋण की व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिए । इस जनजाति की महिलाओं को आधुनिक तकनीकों की जानकारी प्रदान की जाए। आर्थिक प्रोत्साहन हेतु कुटीर उद्योग एवं कौशल विकास संबंधित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। जिससे उनके आय में स्वतः वृद्धि होगी एवं उन्हें ऋणग्रस्तता जैसी समस्या का सामना करना नहीं पड़ेगा ।

संदर्भ सूची

1. दुबे, एस.सी., (1951) "द कमार" इथनोग्राफी एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी लखनऊ, उत्तरप्रदेश

2. कोठारी सी. आर., रिसर्च मेथडोलॉजी (2004) न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन न्यू दिल्ली

3. कुमार, जितेंद्र (2013. विशेष पिछड़ी (आदिम) जनजाति कमार: एक नृजातिवृतांततात्मक परिदृश्य, रिसर्च ज ऑफ ह्यूमनिटीस एंड सोशल साईस

4. कुरे, एस. एवं प्रधान (2014) ट्राइबलडेवलपमेंट प्रॉब्लेम्स एंड पॉसिब्लीटि (छत्तीसगढ़ पीटीजी कमार) इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट सोसियोलॉजी एण्ड हयूमैनिटी

5. सेठी, अर्चना (2017) कमार जनजाति की आय एवं उपभोग प्रविती का अध्ययन, धमतरी छ.ग. जर्नल आफ रुरल डेवलपमेंट

6. गुप्ता, एम. एल. तथा शर्मा, डी.डी. (2005) भारतीय सामाजिक समस्याएं, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा

7. उपाध्याय, विजय शंकर (2010) जनजातीय विकास, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ

अकादमी, भोपाल

8. राज्यपाल का प्रतिवेदन 2016-17, छत्तीसगढ़ शासन, नया रायपुर छत्तीसगढ़

9. जिला वार्षिक योजना 2018-19, कार्यालय कलेक्टर (जिला योजना एवं सांख्यिकी), जिला-गरियाबंद (छ.ग.)